२८९२

अथ

सन्तानगोपालस्तोत्रं

प्रारभ्यते ।

श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर,
देवप्रयाग (-हिमालय)
जोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्रस्तावना ।

विदांकुर्वन्तु तावत् " नापुत्रस्य लोकोऽस्ति " इति श्रुतिबोधिताऽपुत्रताप्रयुक्ताऽलोकतानिरसनाय पुत्रोत्पत्तिसाधनं सन्तानगोपालस्तोत्रं पूर्वाचार्यैः प्रणीत तदेतदस्माभिः सौकर्यतो लाभाय मुद्रितं संगृह्य पुत्रलाभं संपादयंत्वपुत्रिण इति॥

इसका नित्य पाठ करो

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

॥ अथ सन्तानगोपालस्तोत्रं प्रारभ्यते ॥
श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ श्रीशं कम
लपत्राक्षं देवकीनन्दनं हरिम् ॥ सुतसंप्रा
प्तये कृष्णं नमामि मधुसूदनम् ॥ १ ॥
नमाम्यहं वासुदेवं सुतसंप्राप्तये हरिम् ॥
यशोदाङ्कगतं बालं गोपालं नन्दनन्दनम्
॥ २ ॥ अस्माकं पुत्रलाभाय गोविन्दं
मुनिवन्दितम् ॥ नमाम्यहं वासुदेवं देवकी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नन्दनं सदा॥३॥गोपालं डिंभकं वन्दे कम
लापतिमच्युतम् ॥ पुत्रसंप्राप्तये कृष्णं
नमामि यदुपुङ्गवम् ॥ ४ ॥ पुत्रकामेष्टि
फलदं कञ्जाक्षं कमलापतिम् ॥ देवकी
नन्दनं वन्दे सुतसंप्राप्तये मम॥५॥ पद्मापते
पद्मनेत्र पद्मनाभ जनार्दन ॥ देहि मे तनयं
श्रीश वासुदेव जगत्पते ॥ ६ ॥ यशोदांक
गतं बालं गोविन्दं मुनिवन्दितम् ॥ अस्मा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

ॐ पुत्रलाभाय नमामि श्रीशमच्युतम्
॥ ७ ॥ श्रीपते देवदेवेश दीनार्तिहरणा
च्युत ॥ गोविन्द मे सुतं देहि नमामि त्वां
जनार्दन ॥ ८ ॥ भक्तकामद गोविन्द भक्त
रक्षशुभप्रद॥ देहि मे तनयं कृष्ण रुक्मिणी
वल्लभ प्रभो ॥ ९ ॥ रुक्मिणीनाथ सर्वेश
देहि मे तनयं सदा ॥ भक्तमन्दार पद्माक्ष
त्वामहं शरणं गतः ॥ १० ॥ देवकीसुत

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गोविन्द वासुदेव जगत्पते ॥ देहि मे तनयं
कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ ११ ॥ वासु
देव जगद्वन्द्य श्रीपते पुरुषोत्तम ॥ देहि मे
तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥ १२ ॥
कञ्जाक्ष कमलानाथ परकारुणिकोत्तम ॥
देहि मे तनयं० ॥ १३ ॥ लक्ष्मीपते पद्मनाभ
मुकुंदमुनिवन्दित ॥ देहि मे तनयं० ॥ १४ ॥ ३
कार्यकारणरूपाय वासुदेवाय ते सदा ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नमामि पुत्रलाभार्थं सुखदाय बुधाय ते
॥ १५ ॥ राजीवनेत्र श्रीराम रावणारे हरे
कवे ॥ तुभ्यं नमामि देवेश तनयं देहि मे
हरे ॥ १६ ॥ अस्माकं पुत्रलाभाय भजामि
त्वां जगत्पते ॥ देहि मे ननयं कृष्ण वासु
देव रमापते ॥ १७ ॥ श्रीमानिनीमानचोर
गोपीवस्त्रापहारक ॥ देहि मे तनयं कृष्ण
वासुदेव जगत्पते ॥ १८ ॥ अस्माकं पुत्रसं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

प्राप्तिं कुरुष्व यदुनन्दन ॥ रमापते वासु
देव मुकुन्द मुनिवन्दिन्त।१९।वासुदेव सुतं
देहि तनयं देहि माधव ॥ पुत्रं मे देहि श्री
कृष्ण वत्सं देहि महाप्रभो ॥२०॥ डिम्भकं
देहि श्रीकृष्ण आत्मजं देहि राघव ॥ भक्त
मन्दार मे देहि तनयं नन्दनन्दन ॥ २१ ॥
नन्दनं देहि मे कृष्ण वासुदेव जगत्पते।कम
लानाथ गोविंद मुकुन्दमुनिवंदित ॥ २२ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
सुतं देहि श्रियं देहि श्रियं पुत्रं प्रदेहि मे
॥२३॥ यशोदास्तन्यपानज्ञं पिबन्तं यदु
नन्दनम् ॥ वन्देऽहं पुत्रलाभार्थं कपिलाक्षं
हरिं सदा ॥ २४ ॥नन्दनन्दन देवेश नन्दनं
देहि मे प्रभो। रमापते वासुदेव श्रियं पुत्रं
जगत्पते ॥ २५॥ पुत्रं श्रियं श्रियं पुत्रं पुत्रं
मे देहि माधव ॥ अस्माकं दीनवाक्यस्य

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

अवधारय श्रीपते ॥ २६ ॥ गोपाल डिम्भ
गोविन्द वासुदेव रमापते ॥ अस्माकं
डिम्भकं देहि श्रियं देहि जगत्पते ॥२७॥
मद्वाञ्छितफलं देहि देवकीनन्दनाच्युत।
मम पुत्रार्थितं धन्यं कुरुष्व यदुनन्दन
॥२८॥ याचेऽहं त्वां श्रियं पुत्रं देहि मे पुत्र
संपदम् ॥ भक्तचिन्तामणे राम कल्पवृक्ष
महाप्रभो ॥ २९ ॥ आत्मजं नन्दनं पुत्रं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

कुमारं डिंभकं सुतम् ॥ अर्भकं तनयं देहि
सदा मे रघुनन्दन ॥ ३० ॥ वन्दे सन्तान
गोपालं माधवं भक्तकामदम् ॥ अस्माकं
पुत्रसंप्राप्त्यै सदा गोविन्दमच्युतम् ॥३१
अकारयुक्तं गोपालं श्रीयुक्तं यदुनन्दनम् ।
क्लींयुक्तं देवकीपुत्रं नमामि यदुनायकम् ।
॥३२॥ वासुदेव मुकुन्देश गोविन्द माध
वाच्युत ॥ देहि मे तनयं कृष्ण रमानाथ

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

महाप्रभो ॥ ३३ ॥ राजीवनेत्र गोविन्द
कपिलाक्ष हरे प्रभो ॥ समस्तकाम्यवरद
देहि मे तनयं सदा ॥ ३४ ॥ अब्जपद्म
नभःपद्मवृन्दरूप जगत्पते ॥ देहि मे वर
सत्पुत्रं रमानायक माधव ॥ ३५ ॥ नन्द
पालधरापाल गोविन्द यदुनन्दन ॥ देहि मे
तनयं कृष्ण रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥ ३६ ॥
दासमन्दारगोविन्द मुकुंद माधवाच्युत ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गोपाल पुण्डरीकाक्ष देहि मे तनयं श्रियम्
॥ ३७ ॥ यदुनायक पद्मेश नन्दगोपवधू
सुत ॥ देहि मे तनयं कृष्णं श्रीधरं प्राण
नायक ॥ ३८ ॥ अस्माकं वांछितं देहि
देहि पुत्रं रमापते ॥ भगवन्कृष्ण सर्वेश
वासुदेव जगत्पते ॥ ३९ ॥ रमाहृदयसंभार
सत्यभामामनःप्रिय ॥ देहि मे तनयं कृष्ण
रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥ ४० ॥ चन्द्रसूर्याक्ष

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गोविन्द पुण्डरीकाक्ष माधव ॥ अस्माकं
भाग्यसपुत्रं देहि देव जगत्पते॥४१ ॥कारु
ण्यरूप पद्माक्ष पद्मनाभसमार्चित ॥ देहिमे
तनयं कृष्ण देकीनन्दनन्दन ॥४२॥ देव
कीसुत श्रीनाथवासुदेव जगत्पते ॥समस्त
कामफलददेहि मे तनयं सदा ॥४३॥ भक्त
मन्दारगम्भीर शङ्कराच्युतमाधव ॥ देहि मे
तनयं गोपबालवत्सक श्रीपते ॥ ४४ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

श्रीपते वासुदेवेश देवकीप्रियनन्दन ॥ भक्त
मन्दार मे देहि तनयं जगतां प्रभो ॥४५॥
जगन्नाथ रमानाथ भूमिनाथ दयानिधे ॥
वासुदेवेश सर्वेश देहि मे तनयं प्रभो॥४६॥
श्रीनाथ कमलपत्राक्ष वासुदेव जगत्पते ॥
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः
॥ ४७ ॥ दासमन्दारगोविन्द भक्तचिन्ता
मणे प्रभो ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

शरणं गतः ॥४८॥ गोविन्द पुण्डरीकाक्ष रमानाथ महाप्रभो ॥ देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥४९॥ श्रीनाथ कमल पत्राक्ष गोविन्द मधुसूदन ॥ मत्पुत्रफलासिद्ध्यर्थं भजामि त्वां जनार्दन॥५०॥स्तन्यं पिबन्तं जननीमुखाम्बुजं विलोक्य मन्दस्मितमुज्ज्वलाङ्गम् ॥ स्पृशन्तमन्यस्तनमंगुलीभिर्वन्दे यशोदाङ्कगतं मुकुन्दम् ।५१।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

याचेऽहं पुत्रसन्तानं भवन्तं पद्मलोचन ।
देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः
॥५२॥अस्माकं पुत्रसंपत्तेश्चिन्तयामि ज
गत्पते ॥ शीघ्रं मे देहि दातव्यं भवता मुनिव
न्दित॥५३॥वासुदेव जगन्नाथ श्रीपते पुरु
षोत्तम ॥ कुरु मां पुत्रदत्तं च कृष्ण देवेन्द्र
पूजित ॥५४॥ कुरु मां पुत्रदत्तं च यशोदा
प्रियनन्दन ॥ मह्यं च पुत्रसन्तानं दातव्यं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

भवता हरे ॥५५॥ वासुदेव जगन्नाथ गोवि
न्द देवकीसुत॥देहि मे तनयं रामकौसल्या
प्रियनन्दन ॥ ५६ ॥ पद्मपत्राक्ष गोविन्द
विष्णो वामन माधव ॥ देहि मे तनय
सीताप्राणनायक राघव ॥ ५७ ॥ कञ्जाक्ष
कृष्ण देवेन्द्र मण्डितं मुनिवन्दितम् ॥
लक्ष्मणाग्रज श्रीराम देहि मे तनयं सदा
॥ ५८ ॥ देहि मे तनयं राम दशरथप्रिय

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

नन्दन ॥ सीतानायक कजाक्ष मुचुकुन्द वरप्रद ॥ ५९ ॥ विभीषणस्य या लंका प्रदत्ता[1] भवता पुरा ॥ अस्माकं तत्प्रकारेण तनयं देहि माधव ॥६०॥ भवदीयपदांभोजे चिंतयामि निरंतरम् ॥ देहि मे तनयं सीताप्राणवल्लभ राघव ॥ ६१ ॥ राम मत्काम्यवरद पुत्रोत्पत्तिफलप्रद ॥ देहि मे

१ भवता दीयते पुरा इति पाठान्तरम् ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

तनयं श्रीश कमलासनवंदित ॥ ६२ ॥
राम राघव सीतेश लक्ष्मणानुज देहि मे ॥
भाग्यवत्पुत्रसंतानं दशरथात्मज श्रीपते
॥ ६३ ॥ देवकीगर्भसंजात यशोदाप्रिय
नंदन॥देहि मे तनयं राम कृष्ण गोपाल
माधव ॥ ६४ ॥ कृष्ण माधव गोविंद
वामनाच्युत शंकर ॥ देहि मे तनयं श्रीश १०
गोपबालकनायक ॥ ६५ ॥ गोपबाल महा

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

धन्य गोविंदाच्युत माधव ॥ देहि मे तनयं कृष्ण वासुदेव जगत्पते ॥ ६६ ॥ दिशतु दिशतु पुत्रं देवकीनंदनोऽयं दिशतुदिशतु शीघ्रं भाग्यवत्पुत्रलाभम् ॥ दिशतुदिशतु श्रीशो राघवो रामचंद्रो दिशतुदिशतु पुत्रं वंशविस्तारहेतोः ॥ ६७ ॥ दीयतां वासुदेवेन तनयं मत्प्रियं सुतम् ॥ कुमारं नंदनं सीतानायकेन सदा मम ॥ ६८ ॥ राम

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

राघव गोविंद देवकीसुत माधव ॥ देहि मे
तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥ ६९ ॥
वंशविस्तारकं पुत्रं देहि मे मधुसूदन ॥ सुतं
देहि सुतं देहि त्वामहं शरणं गतः ॥७०॥
ममाभीष्टसुतं देहि कंसारे माधवाच्युत ॥
सुतंदेहिसुतंदेहित्वामहं शरणंगतः ॥७१॥
चंद्रार्ककल्पपर्यन्तं तनयं देहि माधव ॥
सुतंदेहि सुतंदेहि त्वामहं शरणं गतः॥७२॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

विद्यावंतं बुद्धिमंतं श्रीमंतं तनयं सदा ॥ देहि मे तनयं कृष्ण देवकीनंदन प्रभो ॥ ७३ ॥ नमामि त्वां पद्मनेत्र सुत लाभाय कामदम् ॥ मुकुंदं पुण्डरीकाक्षं गोविंदं मधुसूदनम् ॥७४॥ भगवन्कृष्ण गोविंद सर्वकामफलप्रद ॥ देहि मे तनयं स्वामिंस्त्वामहं शरणं गतः॥७५॥ स्वामिं स्त्वं भगवन् राम कृष्णमाधव कामद। देहि

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मे तनयं नित्यं त्वामहं शर ०॥७६॥तनयं
देहि गोविंद कञ्जाक्ष कमलापते॥ सुतं देहि
सुतंदेहि त्वामहं शरणं गतः॥७७॥ पद्मापते
पद्मनेत्र प्रद्युम्नजनक माधव ॥ सुतं देहि
सुतंदेहि त्वामहं शरणं गतः ॥७८॥ शंख
चक्रगदाखड्गशार्ङ्गपाणे रमापते॥देहि मे त
नयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः ॥७९॥ ना
रायण रमानाथ राजीवपत्रलोचन ॥सुतं

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मे देहि देवेश पद्मपद्मानवंदित ॥ ८० ॥ राम राघव गोविन्द देवकीवरनंदन ॥ रुक्मिणी नाथ सर्वेश नारदादिसुरार्चित ॥ ८१ ॥ देवकीसुत गोविंद वासुदेव जगत्पते ॥ देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक ॥ ८२ ॥ मुनिवन्दित गोविन्द रुक्मिणीवल्लभ प्रभो ॥ देहि मे त० ॥ ८३ ॥ गोपिकार्जितपंकेजमरन्दासक्तमानस ॥ देहि मे

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

त० ॥ ८४॥ रमाहृदयपंकेजलोल माधव
कामद ॥ ममाभीष्टसुतं देहि त्वामहं शरणं
गतः ॥८५॥ वासुदेव रमानाथ दासानां
मंगलप्रद ॥ देहि मे त० ॥८६॥ कल्याण
प्रद गोविंद मुरारे मुनिवंदित ।देहि मे तन०
॥ ८७ ॥ पुत्रप्रदमुकुंदेश रुक्मिणीवल्लभप्र
भो॥देहि मे० ॥८८॥ पुण्डरीकाक्ष गोविंद
वासुदेव जगत्पते ॥ देहि मे त० ॥ ८९ ॥

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

दयानिधे वासुदेव मुकुंद मुनिवंदित । देहि
मे ०॥ १० ॥पुत्रसंपत्प्रदातारं गोविन्दं देव
पूजितम् ॥ वन्दामहे सदा कृष्ण पुत्रलाभप्र
दाय ते ॥ ११ ॥ कारुण्यानिधये गोपी
वल्लभाय मूरारये।वंदामि पुत्रलाभार्थं देहि
मे तनयं विभो ॥ १२॥ नमस्तस्मै रमेशाय
रुक्मिणीवल्लभाय ते ॥देहि मे तनयं श्रीश
गोपबालकनायक ॥ १३ ॥ नमस्ते वासु

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

देवाय नित्यश्रीकामुकाय च ॥ पुत्रदाय
च शेषेन्द्रशायिने रंगशायिने ॥ ९४ ॥
रंगशायिन् रमानाथ मंगलप्रद माधव ॥
देहि मे तनयं श्रीश गोपबालकनायक
॥ ९५ ॥ दासस्य मे सुतं देहि दीनमंदार
राघव। सुतं देहि सुतं देहि पुत्र देहि रमापते
॥ ९६ ॥ यशोदातनयाभीष्टपुत्रदानरतः
सदा ॥ देहि मे तनयं ०॥ ९७ ॥ मदिष्टदेव

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

गोविंद वासुदेव जनार्दन। देहि मे ०॥ ९८॥
नीतिमान्धनवान्पुत्रो विद्यावांश्च प्रजायते। भगवंस्त्वत्कृपायाश्चवासुदेवेन्द्रपूजित
॥९९॥ यःपठेत्पुत्रशतकं सोऽपि सत्पुत्रवान् भवेत्। श्रीवासुदेवकथितंस्तोत्ररत्नं सुखाय च ॥१००॥ जपकाले पठेन्नित्यं पुत्रलाभ धनं श्रियम् ।ऐश्वर्यं राजसंमानं सद्यो याति

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

सं.गो. न संशयः ॥ १०१ ॥ इति श्रीलक्ष्मीकेशव स्तो.
१५ संवादे संतानगोपालस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ ३७ ३८

इदं पुस्तकं श्रीकृष्णदासात्मज-क्षेमराज-श्रेष्ठिना
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणागारे
मुद्रयित्वा प्रकाशितम्।

संवत् १९९८, शकाब्दाः १८६३.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.

१५

श्री लक्ष्मीधर-विद्यामन्दिर,
देवप्रयाग (...)
...पं. चक्रधर जोशी

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षाधीन है।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri

इति

सन्तानगोपालनामस्तोत्रं

समाप्तम् ।

CC-0 Pt. Chakradhar Joshi and Sons, Dev Prayag. Digitized by eGangotri